Class — T.D.C. Part III

Paper — V धर्म-दर्शन (Philosophy of Religion)

डॉ० यू०एन० शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर
दर्शनशास्त्र विभाग
आर० एन० कॉलेज

Topic — प्रयोजनमूलक युक्ति (Teleological Argument)

ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रमाण (Proof for the existence of God)

सभी प्राणियों में होती है। पशु-पक्षी, वनस्पति आदि की रचना उनके स्वभाव एवं परिस्थिति के अनुकूल दिखलायी पड़ती है। इसीप्रकार पृथ्वी, जल, आकाश में रहनेवाले जीवों के शरीर के अंग उनकी परिस्थिति के अनुकूल होते हैं। हिंसक जीवों के दाँत एवं पंजे तेज एवं मजबूत होते हैं। जैसे — शेर, बाघ आदि। इन जीवों की आँतें माँसाहार पचाने में समर्थ होती हैं। इसके विपरीत शाकाहारी जीवों (जैसे — गाय, भैंस, हरिण, बकरी आदि) के जबड़े घास या अन्य शाक खाने के योग्य होते हैं। इसीप्रकार दुर्बल जीवों (जैसे - हरिण आदि) में भागने की विशेष शक्ति होती है जो जीवन-रक्षा के लिए सक्षम है। पक्षियों में उड़ने योग्य डैने होते हैं, वनस्पति में ग्रीष्म एवं वर्षा के अनुकूल परिवर्तन होता है। ये सब प्रकृति के प्रयोजन तथा उसमें निहित व्यवस्था का सूचक है। यह प्रयोजनकर्त्ता के द्वारा ही सम्भव है। ईश्वर ही वह प्रयोजनकर्त्ता एवं व्यवस्थापक है।

कुछ विद्वानों के ~~मतानुसार~~ मतानुसार यह युक्ति विश्वमूलक युक्ति (Cosmological Argument) का विस्तार (Extension) है। विश्वमूलक युक्ति में विश्व को कार्य कहा गया है तथा उसके कारण रूप में ईश्वर का अनुमान किया जाता है। प्रयोजनमूलक युक्ति में विश्व में निहित व्यवस्था के निरीक्षण के आधार पर उसके व्यवस्थापक - रूप में ईश्वर का अनुमान किया जाता है। इस दृष्टि से यह युक्ति विश्वमूलक युक्ति का ही विस्तृत रूप है। इसका समर्थन जॉन हिक (John Hick) ने भी किया है। उनका कहना है कि विश्व को देखकर ईश्वर के प्रति अनुगमन विश्वमूलक युक्ति का विस्तार है।

प्रयोजनमूलक तर्क के अत्यन्त लोकप्रिय होने पर भी इसकी अनेक आलोचनाएँ की गयी हैं। ये हैं —

(i) कान्ट की आलोचना — ① उनके अनुसार विश्व में व्याप्त व्यवस्था एवं प्रयोजन को देखकर उसके प्रयोजन-

कर्त्ता का अनुमान किया जा सकता है। किन्तु इस तथ्य की सिद्धि नहीं हो पाती है कि वह प्रयोजनकर्त्ता ईश्वर ही है।

(2) काण्ट का कहना है कि इस युक्ति में ईश्वर की कल्पना शिल्पकार के रूप में की गयी है। किन्तु शिल्पकार देश एवं काल की सीमा में बँधा होता है, उपादान पर निर्भर रहता है तथा सीमित एवं अपूर्ण होता है। इस आधार पर पूर्ण, असीम एवं अखण्ड ईश्वर को सिद्ध करना कठिन है। शिल्पकार के रूप में ईश्वर को स्वीकार करना उसकी अखण्डता को ठेस पहुँचाना है।

केयर्ड ने भी इसी तथ्य को स्वीकार किया है।

(ii) प्रयोजनमूलक तर्क के द्वारा विकासवादी सिद्धान्त का वर्णन होता है। इसके अनुसार विश्व में व्याप्त व्यवस्था का कारण प्रकृति स्वयं है जिसमें वस्तुओं के पारस्परिक संघर्ष से सर्वोत्तम का चयन होता है और इसप्रकार विश्व का विकास होता है। विकासवाद के अनुसार चयन एवं बहिष्कार द्वारा विश्व की व्यवस्था कायम रहती है। यह एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है, इसे अस्वीकार करना वैज्ञानिक मान्यता का खण्डन है। इसप्रकार प्रयोजनमूलक तर्क को स्वीकार करना कठिन है।

(iii) प्रयोजनमूलक युक्ति के द्वारा धार्मिक भावनाओं की तुष्टि नहीं होती। इस युक्ति में ईश्वर को विश्वातीत (Transcendental) कहा गया है अर्थात् ईश्वर विश्व से परे है जो धार्मिक ~~भावना~~ भावनाओं को संतुष्ट नहीं कर सकता। इसके लिए ईश्वर का विश्वव्याप्त (Immanent) होना आवश्यक है अर्थात् विश्व में रहने वाला ईश्वर ही धार्मिक भावों को समझ सकता है तथा मानवीय प्रार्थनाएँ सुन सकता है।

(iv) इस युक्ति के सन्दर्भ में मौलिक प्रश्न भी किये जा सकते हैं। विश्व में निहित व्यवस्था का आधार यदि ईश्वर है, तो प्रश्न यह उठता है कि ईश्वर में व्याप्त इस व्यवस्था का आधार क्या है?

प्रयोजनमूलक तर्क में निहित अनेक दोषों के बावजूद इसकी महत्ता है। इस तर्क की सबसे बड़ी विशेषता है कि ~~आलो~~ आलोचकों ने भी इसके महत्व को स्वीकार किया है। ~~कान्ट~~, ह्यूम आदि आलोचकों ने इस तर्क को श्रद्धा से देखा है। जॉन हॉस्पर्स (John Hospers) ने इस युक्ति को ~~सम्बन्ध में~~ ईश्वर के अस्तित्व के लिए दिये गये तर्कों में सबसे लोकप्रिय कहा है। यह युक्ति व्यक्ति के आन्तरिक जीवन से जुड़ी है तथा धार्मिकता की रक्षा करती है। जे॰ जे॰ सी॰ स्मार्ट (J. J. C. Smart) ने कहा है कि यह युक्ति धार्मिक संवेगों को संबल प्रदान करती है। प्रो॰ राइट ने इस युक्ति के विषय में कहा है कि सरलता (Simplicity) एवं अनुकूलता (Coherence) इसकी विशेषता है।

इसप्रकार यह युक्ति अत्यन्त प्रभावशाली एवं आकर्षक है।

———X———X———